International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 19-12-2022, Accepted: 05-01-2023, Published: 21-01-2023
Volume 9, Issue 1, 2023, Page No. 13-14

सूर्यबाला के कथा साहित्य में दाम्पत्य जीवन

सोनाली घटक
शोधर्थिनी, आंध्रा विश्वविद्यालय, विशाखापट्टनम आंध्र प्रदेश, भारत

सारांश
दाम्पत्य जीवन पारिवारिक जीवन का मूलाधार है। पारिवारिक जीवन की सुख–समृद्धि एवं शांति पति–पत्नी के पारस्परिक सहयोग पर निर्भर करती है। धीरजभाई वणकर ने दाम्पत्य सम्बन्धों को स्पष्ट करते हुए लिखा है, ''पति एवं पत्नी का मिलन स्थल जगत है। इन दोनों के मिलन से विश्व का नैरन्तर्य सम्भव है। शिव व शक्ति या पुरुष व प्रकृति अर्थात पति व पत्नी से ही विश्व का निर्माण होता है। एक के अभाव में दूसरे का ही नहीं अपितु हमें संसार का भी अभाव मानना पड़ेगा।''[1] इस प्रकार संसार का निर्माण स्त्री–पुरुष के द्वारा ही सम्भव है। पति–पत्नी सम्बन्धों की कटुता समस्त पारिवारिक परिवेश को विषाक्त बना देती है। मनुष्य का विकास बहुत अंशों में उसके पारिवारिक परिवेश पर निर्भर करता है। दाम्पत्य जीवन पर समर्पित व्यक्तित्व समर्पण चाहता है परन्तु समर्पण की यह भावना आज के समय में विलुप्त होती जा रही है। दोनों का व्यवहार एक–दूसरे के प्रति भाव शून्य होता जा रहा है।

मूल शब्दः दाम्पत्य जीवन, मद्यावर्ग जीवन, औद्योगिक प्रगति, वैचारिक विभिन्नता, आर्थिक तंगी

आज वैज्ञानिक प्रगति, नैतिकता की मान्यताओं मूल्यों के पुनर्मूल्यांकन तथा औद्योगिक प्रगति के विकास से मानवीय संवेदनाओं के परिवर्तित रूप को पारिवारिक सम्बन्धों की संस्कृति में भी अनुभव किया जा सकता है। आज दाम्पत्य सम्बन्धों में वह मजबूती दिखाई नहीं देती, जो वैदिक युग में थी। आज न पत्नी के लिए पति देवता और न पति के लिए पत्नी देवीतुल्य। पति–पत्नी के मध्य आज तीसरा व्यक्ति प्रेमी या प्रेमिका के रूप में उपस्थित हो गया है। पति–पत्नी का पारिवारिक जीवन उनके दाम्पत्य सम्बन्धों में त्रिकोणात्मक प्रेम के प्रचलन द्वारा परिवर्तित हो रहा है। कथाकार सर्यू बाला ने अपने कथा साहित्य में दाम्पत्य सम्बन्धों के विविध रूपों को उद्घाटित किया है। ये रूप मुख्यतः पत्नी की पति के प्रति निष्ठा व मधुरता, वैचारिक विभिन्नता, आर्थिक तंगी, कार्य की व्यस्तता, भावनात्मक अभाव और धन लोलुपता आदि हैं। इस तरह इनमें कहीं सुखद दाम्पत्य के उदाहरण हैं, तो कहीं दोनों के मध्य सम्बन्धों में कड़वाहट को भी देखा गया है।

मध्यवर्गीय समाज में पत्नी अपने पति के प्रति निष्ठा एवं मान–सम्मान का भाव रखती है। 'मेरे संधिपत्र' उपन्यास की नायिका शिवा अपने पति रायजादा साहब से न केवल प्यार करती है बल्कि परिवार में उन्हें श्रेष्ठ बनाए रखने के लिए अपनी तथा अपनी बेटियों की नजर में उनके मान–सम्मान में कोई भी कमी नहीं आने देती। शिवा अपने पति के पत्नीत्व में सर्वथा सुख का अनुभव करती है, ''कितना सुखद पत्नीत्व! पत्नी की हर सुख–सुविधा का ध्यान रखने वाले, न जोर से दहाड़ने वाले, न ठठा कर हंसने वाले, दबी जुबान से माँ की हर आज्ञा शिरोधार्य करने वाले।

दूसरी औरतों की तरफ भी हंसी मजाक तो दूर, आंख उठाकर देखना भी नहीं। बेहद सीधे, सुखी, आराम पसंद आदमी। नहीं, उन्हें कोई दोष नहीं दे सकती। शरीर और मन से जितने कुछ पर उनका अधिकार था, सब कुछ दिया था उन्होने मुझे धर्म था, अर्थ था, काम था और जीवन के इन तीनों पुरुषार्थों के सहयोग से अंतिम पुरुषार्थ आनंदमय मोक्ष की कामना कर सकती थी मैं ''1 इस प्रकार बौद्धिक स्तर पर अपने पति से प्रखर होते हुए भी पत्नी अपने पति को इसका बिल्कुल भी अहसास नहीं होने देती और सचमुच इस प्यार–सम्मान में डूबी मोक्ष की कामना करती है।

पति–पत्नी के दाम्पत्य सम्बन्ध परिवार को सुन्दर बनाते हैं। 'एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम' कहानी के नायक उस्ताद अली अफ़जल मुराद की पत्नी जुलेखा उनसे बेहद प्यार करती है और उनकी कामयाबी के लिए मन्नतें मांगती है। जैसे, ''उस्ताद की हर महफिल की कामयाबी के लिए नमाज पर मन्नत मानती जुलेखा... और जब बुलावा आया तो आधी–आधी रात तक परसी थाली सामने धरे इंतजार में डूबी जुलेखा। उस्ताद लौटने पर सबसे पहले उनींदी जुलेखा का माथा चूमते।''इस प्रकार पत्नी अपने पति की कामयाबी के लिए ईश्वर से मन्नतें मांगती है।

मध्यवर्गीय परिवार में पत्नी अपने पति के सुख–दुःख में साथ देना अपना परम कर्त्तव्य मानती है। 'कात्यायनी संवाद' की नायिका कात्या अपनी जिंदगी के कीमती अठारह साल बीमार व अपाहिज पति की देखभाल में लगा देती है और पति भी ऐसा जो इस सेवा के प्रति कृतज्ञ होने के बजाए किसी हिंसक पशु के समान कात्या पर फुफकारता रहता है। कात्या की एक सहेली मेधा उसे यह सारे बंधन तोड़ने के लिए कहती है लेकिन कात्या अपने मौजूदा हालातों से खुश है और जब मेधा इस घुटन वाले माहौल को छोड़कर जा रही होती है, तो कात्या उससे अनुरोध करती है, ''मेधा, तुमसे सिर्फ एक अनुरोध है। मेरे साथ जुड़ी इन सारी स्थितियों को तुम कभी किसी शोषित नारी की कहानी का नाम मत देना। मेरे पास कोई बाध्यता नहीं है– शोषित, प्रताड़ित होने की। मुझे बेचारगी भरे शब्दों से चिढ़ है। मेरी आत्मा मेरा विवेक जो कहता है, करती हूँ। तुम उसे दुर्बलता कहो या भीरुता या आत्मयंत्रणा–स्वतन्त्र हो तुम।'' इस प्रकार पत्नी अपने पति की बड़ी निष्ठा से सेवा करती है और पत्नी के रूप में हर परीक्षा में सफल होती है।

मध्यवर्गीय दाम्पत्य जीवन में आधुनिक शिक्षा के प्रचार–प्रसार से वैचारिक स्तर में भिन्नता के कारण सम्बन्धों में बिखराव आ गया है। 'सिर्फ मैं' कहानी में मेघा और मनमोहन के माध्यम से इस तथ्य को प्रकट किया गया है। मेघा को अपने पति मनमोहन से या उसकी समस्याओं से कुछ लेना देना नहीं है। घा में सिर्फ मैं. है, पति की भावनाओं की कोई परवाह नहीं। मेघा मनमोहन को अपना टासफर दिल्ली करवाने को कहती है जबकि मनमोहन दिल्ली में सफर नहीं करवाना चाहता क्योंकि वह जानता है कि नई जगह में नए सिरे से रहना बड़ा मुश्किल होता है। वह मेघा की जिद को टाल देता है और कहता है, ''सुनो मेघा, तुम्हारी

गली बहुत संकरी है। इसमें मैं कैसे समा सकता हूँ? तुम्हें यदि सिर्फ अपने लिए ही सरोकार है, तो मुझे भी अपने लिए अलग जगह बनानी पड़ेगी। ...क्षमा करना। तुम्हारी ही दिखाई राह पर चल पड़ा हूँ। सुविधा और बचाव के लिए केवल यही एक रास्ता रह गया।'' इस प्रकार पति–पत्नी के विचारों में अन्तर होने के कारण दाम्पत्य सम्बन्ध बिगड़ जाता हैं।

आज के आधुनिक पारिवारिक सम्बन्धों का विच्छेदन केवल आपसी मतभेद या पारिवारिक कलह ही नहीं है बल्कि इसके पीछे आर्थिकी भी जुड़ी हुई है। मध्यवर्गीय समाज में नौकरी तथा प्रमोशन भी पति–पत्नी के पवित्र सम्बन्ध को प्रभावित करती हैं। इस वजूद (स्टेट्स) को पाने के लिए पुरुष अपनी पत्नी तक को बॉस के साथ दैहिक सम्बन्ध रखने के लिए कहता है। 'पराजित' कहानी में बसंत की अपने ऑफिस में प्रमोशन नहीं हो पाती। उससे कम योग्यता वाले व्यक्ति आगे निकल जाते हैं। वह प्रमोशन की कोशिश दस सालों से कर रहा है लेकिन उसके हाथ केवल निराशा ही आती है। इस कारण बसंत अपना सारा क्रोध अपनी पत्नी पर निकालता है। कई लोगों के प्रमोशन का कारण उसकी पत्नियों का बॉस के साथ सम्बन्ध है। बसंत भी अपनी पत्नी निशा को कहता है, ''पिछली पार्टी में मैंने यही सोचकर ही तुम्हें मैक्सी पहनने के लिए सजेस्ट किया था लेकिन तुम बहस–पर–बहस करती अड़ी रहीं और अन्त में वह झिल्ली सी साड़ी पहने एकदम जूनियर्स की बीवियों के बीच बैठी हँसती, बतियाती रही। जबकि मेरे जैसे दूसरे तमाम एग्जीक्यूटिव की बीवियाँ हमेशा सीनियर ग्रुप्स के साथ पूरे एटीकेट के साथ उठती–बैठतीं और घुलने–मिलने की कोशिश करती रहीं। इसलिए तो लोग उन्हें जानते हैं, पहचानते हैं और इसका असर भी पड़ता ही है।'' इस प्रकार पत्नी द्वारा पति की बात न मानने के कारण दाम्पत्य जीवन में बिखराहट आ जाती है।

भावनात्मक स्वभाव का अभाव एवं विचारों में मतभेद दाम्पत्य सम्बन्धों को कटु बना देते हैं। 'यामिनी कथा' उपन्यास में यामिनी का द्वन्द्व उसके असफल संबंध से उपजा है, जो उसे त्रास देता है। यामिनी अपने पति विश्वास को अपना पूर्ण समर्पण देती है किन्तु विश्वास उसे वैसा प्यार नहीं दे पाता। चंद्रकांत बांदिवडेकर ने 'यामिनी कथा' उपन्यास की भूमिका में लिखा है, ''यामिनी के दुख का प्रारंभ, जो कथानिविष्ट है, उसके असफल विवाह से है। यामिनी मामूली नहीं हैं। वह विश्वास से कुछ अधिक चाहती है। प्यार जो शरीर से उत्पन्न होता हुआ भी मानसिक और आत्मिक अधिक है।'' इस प्रकार भावनात्मक अभाव दाम्पत्य सम्बन्धों को कटु एवं जटिल बना देते हैं, जिससे दोनों को मानसिक कष्ट झेलने पड़ते हैं।

नौकरी पेशा मध्यवर्गीय समाज में पति अपनी पत्नी के सुख–दुःख के कार्य व्यवस्तता के कारण कई वर्ष एक ही छत के नीचे साथ–साथ रहने के बावजूद भी नहीं समझ पाता है। 'झील' कहानी की नायिका श्यामली अपने हर कर्त्तव्य को पूरा करती जा रही है। पति रोज के काम में इतना व्यस्त रहता है कि उसे न पत्नी की भावनाओं की परवाह है, न बच्चो की परन्तु जब वह अवकाश ग्रहण कर लेता है, तब उसे पता चलता है कि उसकी पत्नी सुबह नाश्ता नहीं लेती। पति सोचता है उसकी पत्नी को तो सभी सुविधाएं उपलब्ध कराई हैं, उसे किस बात की कमी है परन्तु रात के अंधेरे में जब उसकी नींद खुलती है तब उसे महसूस होता है कि पत्नी श्यामली रो रही है। तब पति को लगने लगता है, ''वे फिर से किसी झील में डूब रहे हैं। लेकिन यह झील कौन सी है? वह जो दिन के उजाले में स्थिर, शांत, सतह बनी कश्तियों को इस पार से उस पार करती रहती है या जो आधी रात के सन्नाटे में तूफानों को समेट–समेटकर सतह से गहराई तक पहुँचाती रहती है।'' इस प्रकार अधिक व्यस्तता भी पति–पत्नी के बीच दूरी व तनाव की समस्या बन जाती है।

दाम्पत्य सम्बन्धों में विकृति का मुख्य कारण धन लोलुपता है, जो व्यक्ति को स्वार्थी बना देता है। 'चोर दरवाजे' कहानी में कथाकार ने आज की वर्तमान अंधानुकरण की परिस्थितियों का मुखौटा रहित चेहरा खोलकर समाज के सामने पेश किया है। आज आदमी धन लोलुपता में इतना व्यस्त है कि उसके पास अपनी चारदीवारी के अन्दर रह रहे अपने जीवन साथी के लिए भी बिल्कुल समय नहीं है। एक दूसरे की इच्छाओं और भावनाओं का आदर करने के मूल्यों को आधुनिक युग के अभिशाप ने सोख लिया है। दूसरों के साथ औपचारिकता निभाते–निभाते पति–पत्नी का दाम्पत्य सम्बन्ध भी अब औपचारिक हो गया है। मन के चोर दरवाजे खोलना चाहते हैं लेकिन नहीं खुल पाते क्योंकि इन्हें बन्द हुए पूरे सत्तरह साल हो गए थे। पत्नी को लगता है ,''कहां? चोर दरवाजा ढप्प से अदृश्य हो जाता है। मैं बेहताशा उस बंद दरवाजे पर हाथ पटक–पटककर चीखती रह जाती हूँ लेकिन दरवाजा नहीं खुलता। मेरी आवाज किसी साउंडप्रूफ घेरे में बंद होकर रह जाती है।'' इस प्रकार दाम्पत्य सम्बन्ध औपचारिक सा बन गया है।

संहार

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि सूर्यबाला ने अपने कथा साहित्य में जहाँ एक ओर आधुनिक परिवेश में दाम्पत्य सम्बन्धों के सौदारनपूर्ण स्थिति का वर्णन किया है, वहीं दूसरी ओर तनावपूर्ण सम्बन्धों का वर्णन भी किया है। 'मेरे संधिपत्र' उपन्यास में शिवा अपने पति रायजादा साहब से न केवल प्यार करती है बल्कि परिवार में उनके मान–सम्मान में कोई भी कमी नहीं आने देती है, जिसके कारण दोनों के मध्य मधुर सम्बन्ध बना हुआ है। 'एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम' कहानी में उस्ताद अली अफ़जल मुराद की पत्नी जुलेखा अपने पति की कामयाबी के लिए मन्नतें मांगती है। 'कात्यायनी संवाद' कहानी की नायिका कात्या अपनी जिंदगी के कीमती अठारह साल बीमार व अपाहिज पति की देखभाल में बिताती है और पत्नी के रूप में हर परीक्षा में सफल होती है। 'सिर्फ मैं' कहानी की मेघा में सिर्फ मैं है, पति की भावनाओं की कोई परवाह नहीं है।

संदर्भ सूची

1. शम्भूरत्न त्रिपाठी, समाज शास्त्र के मूलाधार, पृष्ठ सं 269
2. सूर्यबाला, मेरे संधिपत्र, पृष्ठ सं 81
3. सूर्यबाला, एक इंद्रधनुष जुबेदा के नाम, पृष्ठ सं 120
4. सूर्यबाला, कात्यायनी संवाद, पृष्ठ सं 101
5. सूर्यबाला, थाली भर चाँद, पृष्ठ सं 123
6. सूर्यबाला, यामिनी कथा, पृष्ठ सं 9
7. सूर्यबाला, कात्यायनी संवाद, पृष्ठ सं 68